

## डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 6, प्रारंभिक व्याख्या

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

हम पिछले सत्र में व्याख्या के इतिहास के बारे में बात कर रहे हैं, और हम कुछ सत्रों तक ऐसा करना जारी रखेंगे, फिर से, मुख्य पात्रों और व्याख्या के इतिहास की मुख्य विशेषताओं के बारे में तेजी से आगे बढ़ेंगे। और मुख्य उद्देश्य, नंबर एक, यह प्रदर्शित करना है कि कोई भी पहली बार बाइबिल के पाठ को नहीं उठाता है और न ही उसकी व्याख्या करता है। हम सभी एक लंबी परंपरा के हिस्से के रूप में खड़े हैं जो वास्तव में पुराने नियम से ही चली जाती है, जहां पुराने नियम के लेखकों ने बाइबिल के पाठ को उठाया और उपयोग किया, व्याख्या की और अपने पाठकों के लिए लागू किया, यह प्रदर्शित करने और समझने के लिए कि हम नहीं हैं। किसी पाठ को उठाने और पढ़ने वाले पहले व्यक्ति।

लेकिन दूसरा, इसके साथ-साथ, उस प्रभाव को प्रदर्शित करना और जिस तरह से हम धर्मग्रंथ के प्रति दृष्टिकोण रखते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं, चाहे हमें इसका एहसास हो या न हो, वह अक्सर इसके प्रति आभारी और प्रभावित होता है, चाहे वह सकारात्मक रूप से हम जो काम में लेते हैं या यहां तक कि जिस चीज से हम बचते हैं उसके संदर्भ में भी। नकारात्मक रूप से, जिस तरह से हम पवित्रशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण रखते हैं वह अक्सर बाइबिल के पाठ को शामिल करने के लंबे इतिहास का ऋणी होता है। हमने नए नियम के लेखकों को देखकर समाप्त किया और कैसे नए नियम के लेखकों ने अक्सर पुराने नियम के पाठ को इस विश्वास के साथ उठाया और उपयोग किया कि यीशु मसीह स्वयं पुराने नियम की पूर्ति थे। वह अपने लोगों के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन का चरमोत्कर्ष था।

इस संबंध में एक बहुत ही दिलचस्प पाठ इब्रानियों अध्याय 1 और छंद 1 और 2 है, जहां पुस्तक की शुरुआत में, लेखक, एक तरह से, यह स्थापित करता है कि पुराने नियम को कैसे पढ़ा गया था, कम से कम खुद के द्वारा, लेकिन मुझे लगता है कि अन्य नए नियम के लेखक, जहां इब्रानियों के लेखक कहते हैं, अतीत में, भगवान ने हमारे पूर्वजों से, जो भविष्यवक्ता और पुराने नियम के लेखक होंगे, भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कई बार विभिन्न तरीकों से बात की, लेकिन इन अंतिम

दिनों में, समय में पूर्ति के लिए, उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है। इसलिए यीशु मसीह को पुराने नियम को हटाने या ग्रहण करने या अलग करने के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि इसे पूर्णता में लाने के रूप में देखा जाता है, जो कि पुराने नियम की ओर इशारा कर रहा था, उसके चरमोत्कर्ष और सच्चे इरादे के रूप में देखा जाता है। और इसलिए नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम को इस धारणा के साथ लिखा और पढ़ा कि यीशु अपने लोगों के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन का चरमोत्कर्ष और पूर्णता था।

और हमने कहा कि शायद यह स्वयं ईसा मसीह से उत्पन्न हुआ है, जहां कई स्थानों पर, विशेष रूप से ल्यूक 24 जैसे पाठ में, यीशु प्रदर्शित करते हैं, या वह तर्क देते हैं, दुर्भाग्य से ल्यूक ने यीशु ने जो कहा उसे दर्ज नहीं किया है, लेकिन केवल यह दर्ज किया है कि यीशु ने पूरे पुराने नियम से समझाया कि कैसे सारा शास्त्र उसी में पूरा हुआ, जिस प्रकार सारे धर्मग्रन्थ उसी की ओर संकेत करते थे। बाद में भी, पॉल कहेगा कि जब वह 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में सुसमाचार का सारांश दे रहा है, तो वह कहता है, जो कुछ मुझे दिया गया था वह मैं तुम्हें देता हूँ, अर्थात् यीशु मर गया, दफनाया गया, और तीसरे दिन फिर से जी उठा। शास्त्रों के अनुसार. इसलिए नए नियम के लेखकों ने इस धारणा के साथ काम किया कि पुराने नियम को मसीह की ओर इशारा करने के रूप में समझा जाना चाहिए और यीशु मसीह में पूर्णता के लेंस के माध्यम से व्याख्या की जानी चाहिए।

हमने यह भी कहा कि नया नियम यह प्रदर्शित करने के कई तरीकों का खुलासा करता है कि जिसे हम अधिक शाब्दिक, अधिक सीधी भविष्यवाणी और पूर्ति कह सकते हैं, उससे लेकर अधिक प्रकार की अनुरूप या टाइपोलॉजिकल प्रकार की पूर्ति तक। उदाहरण के लिए, अधिक शाब्दिक प्रकार की पूर्ति का एक उदाहरण मैथ्यू अध्याय 2 और श्लोक 5 में पाया जा सकता है, मैथ्यू के प्रारंभिक खंड में, यीशु मसीह के जन्म और प्रारंभिक बचपन की कथा, अध्याय 2 और श्लोक से शुरू होती है 5. मैं बैकअप लूंगा. यह उस कहानी का हिस्सा है जहां जादूगर यरूशलेम में राजा हेरोदेस के पास यह पूछने के लिए आते हैं कि यह मसीहा कहां है, उसका जन्म कहां हुआ है, और हेरोदेस को यह पता लगाने के लिए अपने कुछ शास्त्रियों के पास जाना पड़ता है।

इसलिये उस ने लोगोंके प्रधान याजकोंऔर शास्त्रियोंको इकट्ठे करके उन से पूछा, मसीह अर्थात् यह मसीहा कहां उत्पन्न होनेवाला है? क्योंकि जाहिर तौर पर राजा हेरोदेस उसे खत्म करना चाहता है क्योंकि यह राजा हेरोदेस के सिंहासन के लिए खतरा है। वह अपने शासन के लिए प्रशंसित किसी अन्य राजा को नहीं रख सकता, उसके सिंहासन के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाला कोई अन्य मसीह या मसीहा राजा नहीं हो सकता। तो उस ने उन से पूछा, यह मसीह कहां उत्पन्न होनेवाला है? क्योंकि फिर से, वह पता लगाना चाहता है ताकि वह उसे मार सके।

पद 5, यहूदिया के बेतलेहेम में, वे उत्तर देते हैं, क्योंकि भविष्यवक्ता ने यही लिखा है, और अब मीका अध्याय 5 और पद 2 से एक उद्धरण आता है, परन्तु तुम यहूदा के देश में बेतलेहेम के शासकों में किसी भी तरह से कम नहीं हो यहूदा, क्योंकि तुझ में से एक शासक निकलेगा जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा होगा। हालाँकि इस पाठ के साथ कुछ अन्य चीजें भी हो सकती हैं, कम से कम बुनियादी स्तर पर लेखक देखता है, और कम से कम लेखक देखता है, बल्कि एक सीधी शाब्दिक पूर्ति। मसीहा का जन्म बेथलहम शहर में होगा, जो कि बहुत ही कम साधनों वाला शहर था, इसकी प्रतिष्ठा महान हो जाएगी क्योंकि मसीहा वहीं से आएगा।

तो मैथ्यू के अध्याय 2, श्लोक 5 और 6 संभवतः बाइबिल पाठ की पूर्ति के अधिक सीधे शाब्दिक पढ़ने का एक संभावित उदाहरण प्रदान करते हैं। हम अक्सर सोचते हैं, जब हम पूर्ति के बारे में सोचते हैं, तो हम एक भविष्यवाणी या भविष्यवाणी के बारे में सोचते हैं जो फिर उसी तरह से पूरी होती है, लगभग उसी तरह जिस तरह से भविष्यवाणी की गई थी, और यह उतना ही करीब है जितना हम उसके करीब पहुंचते हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि ल्यूक अध्याय 4, ल्यूक अध्याय 4 और श्लोक 18-21 में अन्य उदाहरण हैं।

फिर से मंच तैयार करने के लिए, यीशु फिर नाज़रेथ जाते हैं, यह यीशु के प्रलोभन के बाद की शुरुआत है, अब यीशु, याद रखें यीशु को जंगल में शैतान द्वारा लुभाया जाता है, अब वह अपना मंत्रालय शुरू करता है, ल्यूक के अनुसार, वह गलील जाता है, फिर वह नासरत को गया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था, और सब्त के दिन वह अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया, और खड़ा होकर पढ़ने लगा। और कदाचित आराधनालय में उस दिन का पाठ यही होता,

यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे सौंपी गई, और उसे खोलकर वह स्थान मिला जहां लिखा है, कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उस ने गरीबों की खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया, उसने मुझे कैदियों के लिए आजादी, और अंधों के लिए दृष्टि की बहाली, उत्पीड़ितों को रिहा करने, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए भेजा है। और फिर, यह यशायाह में एक वादा या भविष्यवाणी है कि क्या होगा जब, फिर से जब भगवान ने अपने लोगों को बहाल किया, अब यीशु सचमुच खुद को इसे पूरा करते हुए देखते हैं।

प्रभु की आत्मा उस पर आ गई है, जिसे हमने यीशु के प्रलोभन और बपतिस्मा में घटित होते देखा था, जब आत्मा कबूतर के रूप में आई थी, अब यीशु कहते हैं, प्रभु की आत्मा मुझ पर है, उसे प्रचार करने के लिए अभिषेक किया गया है गरीबों के लिए अच्छी खबर, जो वह वास्तव में करता है, अंधों के लिए दृष्टि की बहाली, उत्पीड़ितों को रिहा करना, आदि, जो वह ल्यूक के शेष सुसमाचार में करता है, ल्यूक का यीशु के मंत्रालय का रिकॉर्ड। तो ल्यूक अध्याय 4, यशायाह अध्याय 61 छंद 1 और 2 से एक उद्धरण का एक उदाहरण, शायद अब वस्तुतः एक भविष्यवाणी वादे के रूप में देखा जाता है जो यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरा होता है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, अन्य प्रकार की पूर्ति भी है जो नए नियम के लेखक पुराने नियम में घटित होते हुए देखते हैं जब वे पुराने नियम के पाठ को मसीह के प्रकाश में पढ़ते हैं।

कभी-कभी मैं आश्चर्य हो जाता हूँ, और मुझे अक्सर ऐसा होता हुआ दिखता है, पुराने और नए टेस्टामेंट के बीच संबंध, खासकर जब आप नए टेस्टामेंट के लेखकों को पुराने टेस्टामेंट के पाठ को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि वे पूरे हो गए हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा प्रतीत नहीं होता है कनेक्शन. जब आप देखते हैं कि मूल संदर्भ में क्या चल रहा है और पुराने नियम के लेखक क्या कह रहे हैं और नए नियम के लेखक इसका उपयोग कैसे करते हैं, तो कभी-कभी कोई सीधा संबंध नहीं दिखता है। और यद्यपि यह एकमात्र संभावना नहीं है, जो मैं अक्सर घटित होता हुआ पाता हूँ उसे एक प्रकारात्मक या अनुरूपात्मक संबंध कहा जा सकता है।

अर्थात्, पुराने नियम में अतीत की कोई घटना या व्यक्ति किसी चीज़ का एक मॉडल या प्रकार प्रदान करता है जो अब घटित होता है, नए नियम में एक व्यक्ति या घटना। और विचार यह है कि,

जो धारणा इसके पीछे प्रतीत होती है वह इतनी अधिक नहीं है कि पुराने नियम के लेखक वास्तव में इसकी भविष्यवाणी और भविष्यवाणी कर रहे थे, बल्कि इसके बजाय नए नियम के लेखक, क्योंकि वे इस दृढ़ विश्वास के साथ काम करते थे कि ईश्वर, वही ईश्वर है जो था पुरानी वाचा के तहत अपने लोगों के साथ काम करें, जिन्होंने उन्हें बचाया, और जो मुक्तिपूर्वक, ऐतिहासिक रूप से पुरानी वाचा के तहत अपने लोगों के साथ काम कर रहे थे, वही भगवान अब बड़े पैमाने पर थे, और पुरानी वाचा की पूर्ति में, अब कार्य कर रहे थे मुक्ति की नई वाचा के युग में मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से अपने लोगों को फिर से बड़े पैमाने पर छुड़ाने और पुनर्स्थापित करने के लिए। उस दृढ़ विश्वास के कारण, नए नियम के लेखक अक्सर स्पष्ट पत्राचार और उपमाएँ देख सकते थे, फिर से क्योंकि वे आश्चर्य थे कि पुरानी वाचा के तहत भगवान ने जो किया वह अब बढ़ गया है, अब इसे यीशु मसीह में पूर्ति में कहीं अधिक बड़े पैमाने पर दोहराया गया है।

और इसलिए वे आवश्यक रूप से यह नहीं कह रहे हैं कि पुराने नियम का लेखक इसकी भविष्यवाणी कर रहा था, बल्कि यह कि पाठ और उस घटना या व्यक्ति के भीतर जिसे वह प्रमाणित करता है, हम एक पैटर्न या मॉडल या प्रकार देखते हैं जिसे अब दोहराया जा रहा है और भरा जा रहा है, जैसा कि यह था, यीशु मसीह के व्यक्तित्व और उनके द्वारा लाए गए नई वाचा के उद्धार में एक बड़े पैमाने पर। हम इस पाठ पर थोड़ा और विचार करेंगे, लेकिन मैथ्यू अध्याय 2 और श्लोक 15, 14 और 15, विशेष रूप से श्लोक 15 के लिए फिर से मैथ्यू 2 पर वापस जाने के लिए यह स्पष्टीकरण हो सकता है। हम पहले ही शुरुआत में देख चुके हैं मैथ्यू 5 और 6 के अध्याय 2 के भाग में यीशु को शाब्दिक रूप से एक पाठ को पूरा करते हुए देखा जा सकता है, अर्थात्, राजा, मसीहा का जन्म यहूदा के बेथलेहम में होगा, लेकिन अब हम पुराने नियम का एक बहुत अलग संदर्भ देखते हैं।

अध्याय 14 में, देवदूत प्रकट होता है, मुझे क्षमा करें, अध्याय 2 और श्लोक 13 में, देवदूत मूसा को प्रकट होता है, मुझे क्षमा करें, जोसफ को, और यह आकस्मिक नहीं है कि मैंने मूसा का उल्लेख किया क्योंकि यह अध्याय 2 वास्तव में इसी पर आधारित है। न्यू एक्सोडस मोटिफ़. हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे जब हम नए नियम में पुराने नियम के उपयोग के बारे में बात करेंगे। लेकिन जोसेफ, अब एक देवदूत उसके सामने प्रकट होता है और उसे बच्चे को लेने के लिए

कहता है क्योंकि हेरोदेस अब युद्ध पथ पर है और अपने सिंहासन के प्रतिद्वंद्वी, इस मसीहा को नष्ट करना चाहता है।

अब एक स्वर्गदूत ने यूसुफ को दर्शन देकर कहा, बालक को लेकर मिस्र भाग जाओ, और जब तक मैं तुझ से न कहूं तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस बालक को घात करने के लिये ढूंढने पर है। आयत 14 कहती है, वे उठे, वह रात को बालक को लेकर मिस्र को चला गया। फिर पद 15, और वे हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहे।

और जो वचन यहोवा ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा मिस्र से कहा था, कि मैं ने आपके पुत्र को बुलाया है, वह पूरा हो गया। यह अध्याय, यह उद्धरण वास्तव में होशे अध्याय 11 और श्लोक 1 से एक उद्धरण है। और जब हम इस पाठ्यक्रम में बाद में नए में पुराने नियम के उपयोग के बारे में बात करेंगे तो हम इस पाठ पर और भी अधिक चर्चा करेंगे। लेकिन जिस बात का मैं अब उल्लेख करना चाहता हूं वह यह है कि जब आप मैथ्यू 2 के बिना, होशे अध्याय 11 और पद 1 पर वापस जाते हैं, तो मुझे विश्वास है कि हममें से अधिकांश इसे यीशु मसीह और जोसेफ द्वारा अपने परिवार को मिस्र ले जाने के संदर्भ के रूप में कभी नहीं पढ़ेंगे। और हेरोदेस के मरने के बाद उसे वापस लाना।

वास्तव में, होशे 11 और 1 वास्तव में कोई भविष्यवाणी प्रतीत नहीं होती। यह अपने लोगों को बचाने, उद्धार करने और उनकी देखभाल करने में ईश्वर के कार्यों का अधिक वर्णन है। इसलिए होशे 11 और 1 आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी नहीं है।

निर्गमन की पुस्तक में यह उस समय का संदर्भ है जब परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर निकाला था। अब प्रश्न यह है कि मैथ्यू यीशु मसीह में इस पूर्णता को पाने में कैसे सफल होता है? खैर शायद इसे एक भविष्यवाणी के रूप में देखने या कुछ दोहरे अर्थ या एक छिपे हुए अर्थ के रूप में देखने के बजाय जिसे अब मैथ्यू ने उजागर किया है, क्या यह संभव है कि मैथ्यू इस पाठ को टाइपोलॉजिकल रूप से पढ़ रहा है? वह पाता है कि जिस तरह से भगवान ने पुराने नियम के तहत अपने लोगों को खतरे से बचाने और बचाने के लिए काम किया था, अब वह मसीहा यीशु

मसीह से शुरू करके अपने लोगों को खतरे से बचाने के लिए उसी तरह से काम कर रहा है जैसे वह अब शुरू करता है नई वाचा के उद्धार के तहत अपने लोगों को बचाने और छुटकारा दिलाने के लिए। इसलिए मुझे लगता है कि होशे 11 और मैथ्यू 2 के बीच का संबंध अधिक प्रतीकात्मक या सादृश्यात्मक है।

यह वही ईश्वर है जो अपने लोगों को बचाने और बचाने के लिए काम कर रहा था, अब यीशु मसीह के रूप में फिर से बड़े पैमाने पर कार्य कर रहा है। उसी तरह से भगवान ने अपने बेटे, इज़राइल के लोगों को रखा और उन्हें बचाया, उन्हें सुरक्षित रखा और उन्हें पहले निर्गमन में बचाया, अब एक नए निर्गमन में भगवान अपने बड़े बेटे यीशु मसीह को बचाने के लिए फिर से कार्य कर रहे हैं जो अब मूल रूप से पूरा करेंगे इज़राइल अपने लोगों के रूप में पूरा करने में विफल रहा। इसलिए हम इसके अन्य उदाहरणों की ओर संकेत कर सकते हैं जहां स्पष्ट रूप से नए नियम के लेखकों ने नए नियम और घटनाओं और व्यक्तियों विशेष रूप से ईसा मसीह और पुराने नियम और कुछ घटनाओं और व्यक्तियों के बीच एक टाइपोलॉजिकल या अनुरूप संबंध देखा और नए नियम को पूर्णता, चरमोत्कर्ष के रूप में देखा। उस पैटर्न का।

फिर इसके पीछे मूल धारणा यह है कि यीशु मसीह लंबे समय से प्रतीक्षित पूर्णता का युग लेकर आए हैं। पुराने नियम के ग्रंथ जिस बात की ओर इशारा कर रहे थे और जिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, वह अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूर्ण हो गई है। इसलिए पुराने नियम या नए नियम के लेखकों को इस विश्वास के आलोक में प्रकारों और पैटर्न को उठाया और दोहराया जा सकता है कि जिस तरह से भगवान ने एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना में अपने लोगों को बचाने और छुड़ाने के लिए पुरानी वाचा में काम किया था, वह अब खुद को दोहरा रहा है। यीशु मसीह के व्यक्तित्व में स्थापित नई मुक्तिदायी ऐतिहासिक घटना।

अब कभी-कभी नए नियम के लेखक रब्बी व्याख्या के विशिष्ट या सामान्य तरीकों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। याद रखें कि हमने एक जोड़े को देखा, छोटे से बड़े तक या समान शब्दावली के कनेक्शन के माध्यम से ग्रंथों को एक साथ जोड़ने से दो पुराने नियम के ग्रंथों को एक साथ लाया जा सकता है क्योंकि उन्होंने एक समान विषय को संदर्भित किया है या एक समान शब्द को

संदर्भित किया है या समान शब्दावली है। उदाहरण के लिए हम पहले ही देख चुके हैं कि हम पहले ही मैथ्यू अध्याय 6 में यीशु के कथन को देख चुके हैं। मैथ्यू अध्याय 6 और पद 26 यीशु अपने शिष्यों को ईश्वर के नए लोगों के केंद्र के रूप में बता रहे हैं कि वे जीवन के बारे में चिंता न करें। सुप्रसिद्ध सर्मन ऑन द माउंट के संदर्भ में खाएंगे या पीएंगे ।

और फिर यीशु श्लोक 26 में कहते हैं, आकाश के पक्षियों को देखो, वे न बोते हैं, न काटते हैं, न खलिहानों में संचय करते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या आप उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हैं? तो छोटे से बड़े तक के उस तर्क पर ध्यान दें, यदि ईश्वर स्वर्ग के पक्षियों की देखभाल करेगा तो निश्चित रूप से वह अपने लोगों की देखभाल करेगा जो उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करते हैं जैसा कि बाकी पाठ हमें बताता है। लेकिन नए नियम के इब्रानियों अध्याय 1 और पद 5 में एक और दिलचस्प उदाहरण है जहां लेखक जैसा कि हमने कहा था, लेखक पुरानी वाचा के धर्मग्रंथों पर यीशु मसीह की श्रेष्ठता का प्रदर्शन कर रहा है, यह नहीं कि वे बुरे या हीन या बेकार थे, बल्कि बस यह कि अब यीशु ही हैं पूर्णता चरमोत्कर्ष है इसलिए वह अपने लोगों के लिए ईश्वर का चरम रहस्योद्घाटन है।

अब लेखक यह प्रदर्शित कर रहा है कि पुराने नियम के कई ग्रंथों की अपील करके विशेष रूप से यीशु को उन स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ दिखाया गया है जो पुरानी वाचा का हिस्सा थे और कानून देने का हिस्सा थे। अध्याय 1 और श्लोक 5 में ध्यान दें कि वह यह कहता है कि भगवान ने किस स्वर्गदूत से कहा था और यहां पहला उद्धरण है कि तुम मेरे पुत्र हो, आज मैं तुम्हारा पिता बन गया हूं या फिर मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा पुत्र होगा। वह पहला उद्धरण, तुम मेरे बेटे हो, आज मैं तुम्हारा पिता बन गया हूं, भजन अध्याय 2 से लिया गया है जो उन भजनों में से एक है जिसे आमतौर पर एक शाही भजन माना जाता है जो अक्सर नए नियम में यीशु मसीह पर लागू होता है।

लेकिन दूसरा पाठ जब इब्रानियों का लेखक कहता है या फिर मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा पुत्र होगा यह वाचा के सूत्र का हिस्सा है जब भगवान ने डेविड से बात की और 2 सैमुअल अध्याय 7 श्लोक 14 में डेविड के साथ एक वाचा बनाई थी। उसका पिता बनो, वह राजा है जो

दाऊद के सिंहासन पर बैठता है और वह मेरा पुत्र होगा। संभवतः ये दो ग्रंथ, चाहे इब्रानियों के लेखक ने ऐसा किया हो या प्रारंभिक ईसाइयों ने ऐसा किया हो, क्योंकि ये दोनों ग्रंथ कहीं और संयुक्त प्रतीत होते हैं, संभवतः रब्बियों की तरह, जो पुराने नियम के ग्रंथों को शब्द संघों और शब्दावली की समानता के आधार पर एक साथ लाते थे, संभवतः दोनों इनमें से समान शब्दों और पिता और पुत्र के समान विषय और अनुबंध सूत्र के कारण एक साथ आए और लेखक अब इन्हें एक साथ लाता है और फिर से यीशु मसीह के व्यक्तित्व में उनकी पूर्ति पाता है। तो यह दो पुराने नियम के ग्रंथों का एक उदाहरण हो सकता है जो पिता और पुत्र शब्द द्वारा एक साथ जुड़े हुए हैं और शायद वाचा सूत्र के कारण भी।

नए नियम के लेखकों की इच्छा फिर से और वास्तव में मृत सागर स्कॉल और कुमरान समुदाय और रब्बी दुभाषियों से सामग्री को संक्षेप में प्रस्तुत करने की है और पुराने नियम के लेखकों की इच्छा बार-बार धर्मग्रंथ को समझने की है, लेकिन साथ ही समसामयिक पाठकों और उनकी स्थिति के लिए इसकी प्रासंगिकता प्रदर्शित करने के लिए और एक मायने में इनमें से कई उदाहरण आज अच्छे उपदेशकों और व्याख्याताओं द्वारा किए जाने वाले प्रयास से कम नहीं हैं, न केवल पाठ की व्याख्या का एक सूखा विवरण प्रदान करना है, बल्कि इसके चलन को प्रदर्शित करना है। प्रासंगिकता, इसका अनुप्रयोग, समकालीन पाठकों के लिए इसका महत्व। इसलिए बाइबिल की व्याख्या वास्तव में पुराने नियम तक भी जाती है, जहां पुराने नियम के लेखक बाद में पुराने नियम के लेखक कभी-कभी पहले के पुराने नियम के पाठों को उठाते हैं और बाद की पीढ़ियों के लिए उनकी पुनर्व्याख्या करते हैं, हम देखते हैं कि व्याख्यात्मक गतिविधि नए नियम के लेखकों के माध्यम से जारी है। मृत सागर स्कॉल की रब्बी संबंधी व्याख्यात्मक पद्धतियाँ। लेकिन अब मैं थोड़ा आगे बढ़ना चाहता हूँ और पुराने और नए टेस्टामेंट से परे व्याख्या के शुरुआती तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ और मैं एपोस्टोलिक पिताओं के साथ फिर से शुरुआत करना चाहता हूँ, जो कि प्रारंभिक चर्च संस्थापक हैं। और नए नियम के दस्तावेजों के लेखन के बाद के नेता, जिनकी अवधि लगभग 100 से 150 ई.पू. थी, अपोस्टोलिक पिता वास्तव में लगभग 100 से 600 ई.पू. की एक बड़ी अवधि के थे, जिन्हें कभी-कभी पैट्रिस्टिक काल कहा जाता था, इसलिए यदि आप उन शब्दों को पैट्रिस्टिक्स या प्रारंभिक चर्च के पिता अक्सर देखते हैं। मेरा मानना है कि पैट्रिस्टिक्स 100 से 600 ईस्वी तक की व्यापक अवधि है, लेकिन चर्च फादर्स

100 से लगभग 150 ईस्वी तक की अधिक सीमित अवधि है, लेकिन इसका महत्व यह है कि प्रारंभिक चर्च फादर हमें इस अवधि की बाइबिल व्याख्या की एक झलक देते हैं। नए नियम के लेखन के तुरंत बाद बहुत से प्रारंभिक चर्च के नेता और प्रारंभिक चर्च के पिता जैसे क्लेमेंट या पॉलीकार्प या इग्नाटियस के नाम लेखन का निर्माण करते हैं जहां वे वास्तव में पुराने और नए नियम के ग्रंथों की अपील करते हैं और उनकी व्याख्या करते हैं और इसलिए हमें प्रारंभिक बाइबिल व्याख्या के उदाहरण देते हैं।

अक्सर वे जो कर रहे हैं वह यह है कि वे अक्सर ईसाई धर्म को परिभाषित कर रहे हैं और विशेष रूप से झूठी शिक्षा के खिलाफ बचाव कर रहे हैं और इसलिए वे अक्सर बाइबिल के ग्रंथों की व्याख्या कर रहे हैं ताकि यह दिखाया जा सके कि उन्हें कैसे समझा जाना चाहिए और वे ज्ञानवाद के विपरीत ईसाई मान्यताओं का समर्थन कैसे करते हैं या कुछ अन्य विधर्मी शिक्षा। वास्तव में चर्च के पिताओं की व्याख्या की दो विशिष्ट विशेषताएं हैं जिन्हें मैं देखना चाहता हूं। उनमें से एक को अक्सर टाइपोलॉजिकल व्याख्या के रूप में जाना जाता है, जो टाइपोलॉजिकल या अनुरूप दृष्टिकोण का एक और अधिक चरम रूप है जिसे हमने नए नियम के लेखकों के साथ देखा है लेकिन टाइपोलॉजिकल व्याख्या, दूसरा अधिक प्रतीकात्मक व्याख्या है और हम संक्षेप में उनका वर्णन करेंगे और कुछ उदाहरण देंगे उदाहरण के लिए टाइपोलॉजिकल जहां चर्च के पिता अक्सर विशेष रूप से पुराने टेस्टामेंट में संदर्भ पाते हैं और ईसा मसीह के जीवन और नए टेस्टामेंट की शिक्षाओं में पत्राचार पाते हैं।

उदाहरण के लिए, एक प्रारंभिक लेख जिसे बरनबास का पत्र कहा जाता है, अध्याय 12 में पहले सात छंदों में निर्गमन 17 में मूसा की फैली हुई भुजाएँ दिखाई देती हैं। आपके पास वह कहानी है जहाँ मूसा ने अपनी भुजाएँ फैलाई जब इस्राएली लड़ रहे थे, मुझे लगता है कि अमालेकियों और जैसे जब तक उसकी भुजाएँ फैली हुई हैं तब तक वे विजयी हैं, लेकिन बरनबास के पत्र में इसे मसीह की मृत्यु के एक प्रकार के रूप में देखा गया है, जहाँ उसने वस्तुतः अपनी भुजाएँ फैलाई थीं और क्रूस पर चढ़ा दिया था। इसलिए फिर से उसे एक संदर्भ मिला है जो इस धारणा से शुरू होता है कि यीशु मसीह सभी पुराने नियम को पूरा करता है, उसे यीशु द्वारा बाहें फैलाए जाने का संदर्भ और निर्गमन अध्याय 17 में मूसा द्वारा बाहें फैलाए जाने का संदर्भ मिला है।

एक और अधिक प्रसिद्ध उदाहरण जिसके बारे में शायद आपने सुना हो और आप परिचित हों, वह फर्स्ट क्लेमेंट नामक एक अन्य दस्तावेज़ का उदाहरण है। पहला क्लेमेंट अध्याय 12 और श्लोक 7 राहब के लाल रंग के धागे को संदर्भित करता है, पुराने नियम के जासूसों की कहानी को याद रखें, राहब को जासूसों को खतरे से बचाना है और उसे अपनी खिड़की में एक लाल रंग का धागा लटकाना है और फर्स्ट क्लेमेंट वह किताब है पुराने नियम में मसीह के रक्त के एक प्रकार के रूप में वर्णित राहब के इस लाल रंग के धागे को लिया, मसीह के लाल या लाल रक्त और इसलिए उसने लेखक को देखा, सबसे पहले क्लेमेंट ने देखा कि राहब ने अपनी खिड़की में जो लाल रंग का धागा लटकाया था, वह वास्तव में उसके एक प्रकार के रूप में था। यीशु मसीह के रक्त के माध्यम से आने वाले उद्धार का पूर्वाभास। तो आप पाएंगे कि सभी प्रकार के अन्य उदाहरण हैं, विशेष रूप से टाइपोलॉजिकल प्रकार की व्याख्याओं की उन दो पुस्तकों में, जिनमें से कई हमें अत्यधिक चरम लगते हैं, जहां पुराने नियम में कुछ छोटे विवरणों को ईसा मसीह के जीवन में कुछ विवरणों के पूर्वाभास के रूप में देखा जाता है।

बाइबिल पाठ की व्याख्या करने का एक अधिक सामान्य तरीका जो 15वीं 16वीं शताब्दी में सुधार काल तक और मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन के साथ लोकप्रिय होना शुरू हुआ और उस पद्धति की व्याख्या करने का उनका दृष्टिकोण जो तब तक हावी रहा वह रूपक पद्धति थी। विशेष रूप से पुराने नियम की व्याख्या करने का एक बहुत ही लोकप्रिय तरीका और जो कुछ हुआ वह पुराने नियम में कोई व्यक्ति या कुछ और था, एक व्यक्ति, एक घटना, एक वस्तु, एक संस्था को एक गहरा स्तर का अर्थ, एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ दिया गया था, इसलिए आमतौर पर एक भौतिक व्यक्ति वस्तु घटना थी। आध्यात्मिक को एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ दिया गया जिसे अक्सर इसके वास्तविक अर्थ के रूप में देखा जाता था। इसलिए, बिना कोई विशिष्ट उदाहरण दिए बरनबास का पत्र, जिसका उल्लेख मैंने पहले ही मूसा की बांहें फैलाकर किया था, विशेष रूप से पुराने नियम के कानून के कई विवरणों में विस्तृत रूपक अर्थ पाता है। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि इस समय के दौरान चर्च परंपरा ने व्याख्याशास्त्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की और ऐसा करना जारी रखा और फिर से सुधार में मार्टिन लूथर और

जॉन कैल्विन तक विशेष रूप से लूथर ने इस पर प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन चर्च परंपरा शुरू हुई एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना और चर्च के विश्वास के प्रति अपील करना।

ईसाई धर्म के अस्तित्व की पहली कुछ शताब्दियों के दौरान चर्च की प्रारंभिक शताब्दियों में बाइबिल की व्याख्या के लिए एक प्रमुख दृष्टिकोण मिस्र के अलेक्जेंड्रिया से जुड़ा था और वह रूपक पद्धति थी। इसके सबसे प्रसिद्ध चिकित्सकों में से एक फिलो था फिलो को पुराने नियम के पाठ की विशेष रूप से रूपक रूप से व्याख्या करने के लिए जाना जाता है, संभवतः यह प्रदर्शित करता है कि यह वास्तव में कई बार ग्रीक दार्शनिक विचारों का समर्थन कैसे करता है, लेकिन वह पुराने नियम की कथा को रूपक के रूप में फिर से खोजकर व्याख्या करता है। भौतिक शाब्दिक घटनाओं के सन्दर्भ और व्यक्तियों द्वारा उसके पीछे गहरे रूपकात्मक दूसरे स्तर के अर्थ का पता लगाना। मुझे लगता है कि सबसे प्रसिद्ध रूपक शब्द की उत्पत्ति एक सौ पचासी से दो सौ चौवन ईस्वी तक हुई थी, यानी दूसरी शताब्दी के अंत से तीसरी शताब्दी तक।

ओरिजिन को पुराने नियम की रूपक रूप से व्याख्या करने के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता है, विशेष रूप से आप उनके पहले सिद्धांतों में उनकी व्याख्यात्मक पद्धति के बारे में अधिक पढ़ सकते हैं, आप उसे गूगल कर सकते हैं और ऑनलाइन उसके अनुवाद पा सकते हैं, लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स के प्रति उनका दृष्टिकोण कितना दिलचस्प और शिक्षाप्रद है। और व्याख्या. उत्पत्ति विशेष रूप से पॉलिन के कार्यों में पाए जाने वाले इस विचार से शुरू हुई कि जैसे मनुष्य शरीर आत्मा और आत्मा से बना है, फिर से आपको पॉल के पत्रों में कुछ स्थानों पर वह वाक्यांश मिलता है, लेकिन जैसे मनुष्य तीन भागों से बना है शरीर आत्मा और आत्मा वह ऐसा कहता है शास्त्र करता है. पवित्रशास्त्र के तीन अर्थ हैं जो शरीर, आत्मा और आत्मा से मेल खाते हैं, अर्थात् शास्त्र का शाब्दिक अर्थ है, एक भौतिक शाब्दिक अर्थ है जो शरीर के अनुरूप होगा, इसका एक नैतिक अर्थ भी है जो आत्मा के अनुरूप होगा और फिर इसका एक धार्मिक अर्थ भी है जो कि होगा। आत्मा के अनुरूप.

अब यह उत्पत्ति के लिए महत्वपूर्ण था, यह दिलचस्प है कि उत्पत्ति इसे केवल हवा में नहीं गढ़ रही है, यह उस समय की एक महत्वपूर्ण पद्धति थी और कुछ अर्थों में वह बस अपने समय का

एक बच्चा हो सकता है, लेकिन दूसरी ओर वह भी रूपक को प्रेरणा में बांध दिया गया है यदि बाइबिल का पाठ प्रेरित है तो निश्चित रूप से केवल सतही भौतिक अर्थ से कहीं अधिक है, लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ होना चाहिए, इसलिए उन्होंने रूपक को प्रेरित होने वाले धर्मग्रंथ के पाठ के प्राकृतिक परिणाम के रूप में देखा। इसके अलावा उन्होंने दिलचस्प रूप से रूपक को किसी की बौद्धिक और आध्यात्मिक परिपक्वता के संकेत के रूप में भी देखा, इसलिए जो वास्तव में आध्यात्मिक रूप से परिपक्व था, लेकिन बौद्धिक रूप से चतुर भी था, वह पाठ को रूपक बनाने में सक्षम था। यह दिलचस्प है कि हम इसके विपरीत सोचते हैं जो आज पाठ का रूपक लगाता है, हम सोचते हैं कि वह वयस्क है या उसने अपना दिमाग खो दिया है और अक्सर ऐसा होता है कि सभी प्रकार की पागल चीजें हो सकती हैं, लेकिन मूल और वह जो इसकी शाब्दिक व्याख्या कर सकता है और व्याख्या कर सकता है। यह सही है कि वही व्यक्ति है जो आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से परिपक्व है।

दिलचस्प बात यह है कि ओरिजिन ने इसे दूसरी तरह से देखा। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 19 और श्लोक 30 से 38 तक का एक उदाहरण, लूत की अपनी बेटियों के साथ यौन संबंध बनाने की कहानी, मेरा मानना है कि इस पाठ को समझने के लिए प्रतीकात्मक रूप से दिलचस्प है क्योंकि उत्पत्ति के लिए यह एक शिल्प प्रतीत होता है, इसका क्या मूल्य हो सकता है लूत के यौन शोषण की कहानी में आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से क्या मूल्य हो सकता है। तो उत्पत्ति के अनुसार लूत ने रूपक रूप से मानव मन का प्रतिनिधित्व किया।

लूत की पत्नी यहां संदर्भ लूत के अपनी पत्नी के साथ यौन संबंधों का है लेकिन लूत की पत्नी ने शरीर और आनंद का प्रतिनिधित्व किया और लूत की बेटियों ने गौरव का प्रतिनिधित्व किया। इसलिए उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को लिया और मूल रूप से पाठ को मूल्य देने के लिए उन्हें कुछ आध्यात्मिक अर्थ देने के लिए उनका रूपक बनाया। शायद मैं बार-बार इस बारे में अधिक विवरण में नहीं जाना चाहता कि वह ऐसा क्यों करता है या वह ऐसा कैसे करता है, बल्कि सिर्फ यह प्रदर्शित करना चाहता हूं कि मूल क्या करने की कोशिश कर रहा था और लूत और उसकी पत्नी की कहानी में क्या रूपक विधि शामिल थी। उत्पत्ति 19 में उनकी बेटियाँ।

रूपक का उत्कृष्ट उदाहरण शायद बाद में सेंट ऑगस्टीन की दृष्टांत की व्याख्या से आया है और वास्तव में दृष्टांत इस प्रकार की रूपक व्याख्या के लिए बहुत परिपक्व साबित हुए और काफी समय तक जारी रहे। लेकिन यहां आपको अच्छे सामरी का दृष्टांत याद है जहां एक व्यक्ति सड़क पर था और लुटेरों ने उसे कूदा दिया और पीटा और अधमरा छोड़ दिया और एक पुजारी आता है और दो यहूदी नेताओं और महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा एक लेवी आता है, फिर भी वे रुकने में विफल रहते हैं विभिन्न कारणों से और उस व्यक्ति की मदद करें जो पीटा गया है और देखो और देखो कि सामरी एक सबसे असंभावित नायक के पास आता है और इस व्यक्ति को ले जाता है और उस पर पट्टी बांधता है, उसे एक सराय में ले जाता है और उसके रखरखाव में रहने के लिए भुगतान करता है और सेंट ऑगस्टीन ने इसे रूपक के रूप में पढ़ा है और हमें रूपक व्याख्या के अधिक शास्त्रीय उदाहरणों में से एक देता है। तो यहां यह मूल रूप से है जब दृष्टांत कहता है कि एक आदमी यरूशलेम से जेरिको की सड़क पर जा रहा था जहां उसे पीटा जाता है, यह आदमी एडम है।

तब यरूशलेम को प्रतीकात्मक रूप से शांति के स्वर्गीय शहर के रूप में जाना जाता है। तो यरूशलेम भौतिक शहर नहीं है, यरूशलेम अब स्वर्गीय शहर के लिए खड़ा नहीं है जहां से आदम का पतन हुआ था। जेरिको प्रतीकात्मक रूप से चंद्रमा के लिए खड़ा है और इसलिए एडम की मृत्यु का प्रतीक है।

जिन लुटेरों ने इस आदमी को पीटा, वे शैतान और उसके स्वर्गदूतों के प्रतीक हैं। तथ्य यह है कि उन्होंने उसे छीन लिया, इसका मतलब है कि उन्होंने उससे उसकी अमरता छीन ली। उन्होंने उसे पीटा, इसका मतलब है कि उन्होंने उस आदमी को पाप करने के लिए उकसाया।

वह आदमी फिर से एडम पर आरोप लगाता है। तो आप देख सकते हैं कि यह दृष्टांत सृजन कथा पर एक टिप्पणी के रूप में शुरू हो रहा है। उन्होंने उसे आधा मरा हुआ छोड़ दिया, इसका मतलब यह है कि वह आध्यात्मिक रूप से मर गया, इसलिए वह आधा मरा हुआ है।

याजक और लेवी पुराने नियम के पौरोहित्य और मंत्रालय के लिए खड़े हैं। दिलचस्प बात यह है कि यही वह मुद्दा है जिस पर आज अधिकांश लोग विवाद नहीं करेंगे। सामरी का अर्थ अभिभावक कहा जाता है इसलिए सामरी स्वयं मसीह है।

यह एक यहूदी पाठक के लिए काफी चौंकाने वाला होता, जो सामरी लोगों से घृणा करता था। सामरी स्वयं मसीह के लिए खड़े हैं। तथ्य यह है कि वह घावों पर पट्टी बांधता है, इसका मतलब पाप को बांधना और रोकना है।

तेल आशा के आराम का प्रतीक है। शराब उत्कट भावना से काम करने के प्रोत्साहन का प्रतीक है। गधा यीशु के अवतार के मांस का प्रतीक था।

दिलचस्प बात यह है कि सराय चर्च का प्रतीक है। अगले दिन जब वह उसे सराय में ले जाता है तो उसके अगले ही दिन पुनरुत्थान का उल्लेख होता है। पुनरुत्थान के अगले दिन दो चाँदी के सिक्के प्रतीकात्मक रूप से इस जीवन और आने वाले जीवन के वादे का प्रतीक हैं।

और फिर सराय का मालिक प्रेरित पॉल है। तो इस प्रकार सेंट ऑगस्टाइन ने दृष्टांत के विभिन्न तत्वों को लेकर इस दृष्टांत को समझा और वास्तव में गहरे स्तर के अर्थ का एक रूपक अर्थ खोजा जिसे वह पुराने नए नियम में कहीं और पाता है। हम बाद में दृष्टान्तों के बारे में बात करेंगे लेकिन मैं आपको केवल रूपक दृष्टिकोण का एक उदाहरण दे रहा हूँ जो प्रारंभिक बाइबिल व्याख्या में प्रमुख दृष्टिकोण बन गया।

अब मैं कहना चाहता हूँ कि यह समझना महत्वपूर्ण है, हालांकि यह दृष्टिकोण निश्चित रूप से बहुत अधिक व्यक्तिपरकता के प्रति संवेदनशील है और निश्चित रूप से दुरुपयोग के प्रति भी संवेदनशील है। और जबकि हम यह देख सकते हैं कि प्रारंभिक चर्च के पिताओं और प्रारंभिक व्याख्याकारों ने क्या किया और उससे और विशेष रूप से ज्यादातियों और चरम सीमाओं से बचना चाहते हैं, यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि वहां अभी भी यह समझना महत्वपूर्ण है कि हम कुछ वैसा ही करते हैं जैसा वे थे। ऐसा तब करते हैं जब हम पाठ को प्रासंगिक बनाने का प्रयास

करते हैं। रूपक पद्धति केवल मनमाने ढंग से धर्मग्रंथ के पाठ के साथ खिलवाड़ करना और सभी प्रकार के अजीब अर्थ निकालने की कोशिश नहीं थी, बल्कि पाठ को प्रासंगिक बनाने का एक प्रयास था।

कोई लूत और उसकी पत्नी और बेटियों के साथ संबंधों की कहानी कैसे बना सकता है? कोई इसे आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से कैसे प्रासंगिक बना सकता है? कोई गुड सेमेरिटन जैसी कहानी को आज के लिए प्रासंगिक कैसे बना सकता है? कम से कम हम जो भी रूपक के बारे में सोचते हैं, वह निर्देशात्मक है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि व्याख्या का उद्देश्य हमेशा आधुनिक पाठकों के लिए भगवान के वचन की प्रासंगिकता को प्रदर्शित करना रहा है, भले ही धर्मग्रंथ के शुरुआती व्याख्याकारों ने इसे बहुत अधिक बढ़ा दिया हो। और हम आरंभिक चर्च के पिताओं और पितृसत्तात्मक युग में व्याख्या के अन्य उदाहरण देख सकते हैं, लेकिन जो दो बिंदु मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि प्रमुख दृष्टिकोण बाइबिल पाठ को रूपक रूपक रूपक रूपक व्याख्या बन गया है। जैसा कि हम बाद में देखने जा रहे हैं, वास्तव में रूपक की व्याख्या करने और रूपक की व्याख्या करने के बीच एक अंतर है, जो किसी ऐसी चीज़ का रूपक है जिसका उस तरह से व्यवहार करने का इरादा नहीं है, जैसा कि उस पाठ की व्याख्या करने के विपरीत है जिसे रूपक के रूप में लिया जाना है।

लेकिन प्रारंभिक व्याख्या की विशेषता यह थी कि पुराने नियम के पाठ के उपचार में सुधार तक एक प्रकार का प्रमुख दृष्टिकोण बन गया था, विशेष रूप से रूपक रूप से पाठ के भीतर एक गहरे अर्थ को खोजने के लिए छिपे हुए अर्थ की खोज करना। प्रारंभिक व्याख्या की दूसरी विशेषता जो भाप बनने लगी और लुढ़कने लगी, वह चर्च की परंपरा और चर्च की धार्मिक मान्यताओं और व्याख्याओं के प्रकाश में व्याख्या करने वाली प्रारंभिक चर्च परंपरा पर ध्यान केंद्रित करना था जो चर्च का समर्थन और प्रतिबिंबित करती थी। धर्मशास्त्र इसलिए रूपक व्याख्या और साथ ही चर्च परंपरा को प्राथमिकता देना अब पुराने नए नियम के प्रमुख व्याख्यात्मक या व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर हावी हो गया है।

आगे बढ़ने के लिए और फिर से चर्च के इतिहास की अन्य अवधियों और व्याख्या में अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन फिर से हम आगे बढ़ेंगे और व्याख्या के इतिहास में कुछ प्रमुख आंदोलनों पर बात करेंगे। इसलिए मैं 16वीं शताब्दी के सुधार की ओर जाना चाहता हूँ और फिर पहले जैसा कि हमने कहा था कि चर्च परंपरा पर केंद्रित व्याख्या, चर्च परंपरा न केवल चर्च के पिताओं की व्याख्या में बल्कि उससे भी आगे और फिर व्याख्या की रूपक पद्धति की व्याख्या में बढ़ी थी। एक अर्थ में सुधार का व्याख्यात्मक दृष्टिकोण या व्याख्यात्मक दृष्टिकोण इन दोनों प्रवृत्तियों के प्रति असंतोष और प्रतिक्रिया से विकसित हुआ।

हम देखेंगे कि सुधार आम तौर पर दो व्यक्तियों मार्टिन लूथर और जॉन केल्विन पर बहुत संक्षेप में नजर डालने से पहले हो सकता है, सुधार को हिब्रू और ग्रीक दोनों मूल भाषाओं में बाइबिल का अध्ययन करने में रुचि और यहां तक कि इसके बारे में जागरूकता के रूप में भी चित्रित किया जा सकता है। पाठ के साहित्यिक प्रकारों में पाठ को उनके मूल ऐतिहासिक संदर्भ के प्रकाश में समझने की इच्छा होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे केवल चर्च परंपरा पर ध्यान केंद्रित करने और फिर बाइबिल पाठ के रूपक को प्रस्तुत करने के पिछले दृष्टिकोण से असंतोष के साथ प्रतिक्रिया में और फिर से बाइबिल की व्याख्या के लिए सुधारकों के दृष्टिकोण को चित्रित करना शुरू कर देते हैं। एक बात जो स्पष्ट रूप से इस दृष्टिकोण के पीछे भी है वह यह है कि अब सुधार के साथ बाइबिल अब केवल चर्च के नेताओं के हाथों में नहीं है बल्कि अब आम व्यक्ति के हाथों में है इसलिए इसे समझा जा सकता है।

महत्वपूर्ण निहितार्थों और फोकसों में से एक धर्मग्रंथ की स्पष्टता थी अर्थात् इसे आम व्यक्ति द्वारा समझा जा सकता है। इसकी व्याख्या करने के लिए किसी को चर्च परंपरा या अधिकार की आवश्यकता नहीं है, लेकिन कोई इसे इसके प्रकाश में समझ सकता है, कोई हिब्रू और ग्रीक जैसी मूल भाषाओं को सीख सकता है, कोई पाठ को समझ सकता है, इसे चर्च परंपरा के प्रकाश में नहीं बल्कि उसके प्रकाश में समझा जाना चाहिए। मूल संदर्भ आदि आदि। मार्टिन लूथर, फिर मार्टिन लूथर, जो सुधार आंदोलन के सबसे प्रसिद्ध लोगों में से एक थे, पुराने और नए टेस्टामेंट दोनों की व्याख्या करने के लिए जाने जाते थे, न कि चर्च परंपरा को व्याख्या के केंद्र और बाइबिल के अधिकार के केंद्र के रूप में देखते थे, बल्कि पुराने को देखते थे। और स्वयं नए नियम का पाठ

और इसलिए यह एक सीधी चुनौती थी कि इस समय तक व्याख्याशास्त्र या बाइबिल की व्याख्या किस प्रकार आगे बढ़ी थी।

इसके अलावा लूथर ने बाइबिल पाठ में एक बार फिर एकल शाब्दिक अर्थ या शाब्दिक अर्थ की वकालत की और रूपक दृष्टिकोण के सीधे विपरीत की वकालत की, जिसमें कई अर्थ मिलेंगे। उत्पत्ति, शरीर, आत्मा और आत्मा को याद रखें, जिसे चार चार अर्थों तक विस्तारित किया गया था, न कि केवल तीन चार संभावित रूपक अर्थ, लेकिन अब लूथर उस पर कैसे प्रतिक्रिया करता है, कहता है कि पुराने नए नियम के पाठ में एक भी शाब्दिक अर्थ नहीं है। लूथर ने व्याकरण और इतिहास तथा व्याख्या में उनकी भूमिका पर भी जोर दिया।

व्याख्या को बाइबिल पाठ के ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए, यह व्याकरण के अनुरूप भी होना चाहिए, हालांकि यह दिलचस्प है कि जब आप लूथर को पढ़ते हैं तो उन्होंने खुद को रूपक प्रवृत्तियों से पूरी तरह से मुक्त नहीं किया। उन्होंने अभी भी कभी-कभी रूपक और टाइपोलॉजिकल दृष्टिकोण का पालन किया जो व्याख्या के पहले के दृष्टिकोण से मिलते जुलते थे। और वास्तव में यह दिलचस्प है कि लूथर पर इतना प्रभाव पड़ा कि उनकी कुछ टिप्पणियाँ, विशेष रूप से रोमनों पर उनकी टिप्पणियाँ और विशेष रूप से गलाटियन पर उनकी टिप्पणियाँ अभी भी गलाटियन की हमारी समझ में मूल्यवान योगदान के रूप में देखी जाती हैं।

वास्तव में पॉल की आधुनिक समझ पॉल की आधुनिक व्याख्या को मूल रूप से लूथर और जिसे नए परिप्रेक्ष्य के रूप में जाना जाता है और हम उसके संबंध में कहां आते हैं, के बीच विभाजित किया जा सकता है। इसलिए मार्टिन लूथर का बाइबिल की व्याख्या पर गहरा प्रभाव पड़ा और अब पाठ को कैसे देखा जाता है और जैसा कि मैंने कहा, विशेष रूप से गैलाटियन में उनकी टिप्पणी अभी भी देखी जाती है, यहां तक कि जहां कोई कुछ विवरणों से असहमत हो सकता है, उसे अभी भी व्याख्या के एक मॉडल के रूप में देखा जाता है और ऐतिहासिक और व्याकरणिक संदर्भ के प्रकाश में बाइबिल पाठ की व्याख्या। जिस दूसरे व्यक्ति पर जोर देकर मैं आपका परिचय बहुत संक्षेप में कराना चाहता हूँ वह हैं जॉन कैल्विन।

जॉन केल्विन ने भी रूपक को खारिज कर दिया और इसके बजाय बाइबिल पाठ में अपनी व्याख्या को आधार बनाने की कोशिश की। आप जॉन केल्विन को उनके ईसाई धर्म के संस्थानों के लिए अधिक जानते हैं, लेकिन उसके भीतर हम केल्विन को व्याख्या के सिद्धांतों पर चर्चा करते हुए पाते हैं। हम बस एक क्षण में देखेंगे कि जॉन केल्विन ने भी बाइबिल पाठ पर टिप्पणियाँ लिखीं, लेकिन उन्होंने बाइबिल पाठ में अर्थ और व्याख्या को आधार बनाने की कोशिश की और इसलिए रूपक व्याख्याओं को खारिज कर दिया, जो पाठ के नीचे या पीछे कई और आध्यात्मिक अर्थ ढूँढती थीं।

केल्विन ने व्याख्या के लिए एक अधिक व्याकरणिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण का भी समर्थन किया, जिसमें एक पाठ लेना और उसे उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखना शामिल है, जहां तक लेखक कौन था, पाठकों की स्थिति क्या थी, लेखक व्याकरण संबंधी तत्वों को संप्रेषित करने और उनकी जांच करने का इरादा रखता था। पाठ के अर्थ तक पहुंचने के लिए पाठ की व्याकरणिक संरचना का उपयोग करना। केल्विन ने यह भी समझा और इसकी वकालत की कि बाइबिल स्वयं ही अपना सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता है, शायद प्रारंभिक चर्च परंपरा और चर्च के अधिकार को प्राथमिकता देने की प्राथमिकता के जवाब में। अब केल्विन कहते हैं, नहीं, बाइबिल स्वयं सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता है या धर्मग्रंथ, धर्मग्रंथ की व्याख्या करता है।

हम आज भी देखते हैं कि मुझे अभी भी लगता है कि हम आज भी हमारी कुछ बाइबिलों में इसका प्रभाव देखते हैं, जिसमें हाशिये पर या फुटनोट में समानांतर अंश हैं जो आपको अन्य पाठों की ओर संकेत करेंगे जो समानांतर होंगे और आपको पाठ को समझने में मदद करेंगे। जिसे आप पढ़ रहे हैं या उससे निपट रहे हैं। इसलिए केल्विन बहुत स्पष्ट थे कि धर्मग्रंथ अपना सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता है, शास्त्र धर्मग्रंथ की व्याख्या करता है और मुख्य रूप से उसका मतलब यह है कि सही अर्थ पाठ में ही रहता है और अर्थ का अंतिम मध्यस्थ बाइबिल पाठ है, न कि चर्च प्राधिकारी या चर्च परंपरा. वास्तव में केल्विन ने ऐसी टिप्पणियाँ भी लिखीं जिन्हें आज भी अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

वास्तव में बहुत समय पहले की बात नहीं है, कम से कम हमारे दृष्टिकोण से, मैं न्यू टेस्टामेंट पर एक प्रसिद्ध विद्वान की पाठ्यपुस्तक पढ़ रहा था और न्यू टेस्टामेंट पर टिप्पणियों का सर्वेक्षण कर रहा था और उनमें से अधिकांश का उन्होंने समकालीन टिप्पणियों के साथ उल्लेख किया था। केल्विन और लूथर दोनों की टिप्पणियों का उल्लेख उपदेशक और विद्वानों के पुस्तकालय के लिए अभी भी आवश्यक है। इसलिए जॉन कैल्विन ने रहस्योद्घाटन की पुस्तक को छोड़कर बाइबिल की लगभग हर किताब पर टिप्पणियाँ लिखीं, जिसके बारे में उन्हें नहीं पता था कि क्या करना है और मैंने जो कुछ चीजें पढ़ी हैं उनमें से बहुत से लोगों ने उनका अनुसरण करना बेहतर समझा होगा। रहस्योद्घाटन में न लिखने के बावजूद, उन्होंने फिर भी टिप्पणियाँ लिखीं, जिन्हें न केवल केल्विन के बारे में जो कुछ वे प्रकट करते हैं, बल्कि बाइबिल पाठ में अंतर्दृष्टि के लिए उनके योगदान के लिए आज भी महत्व दिया जाता है। इसलिए लूथर और केल्विन व्याख्याशास्त्र के मानक दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के उदाहरण हैं, जो अर्थ के मध्यस्थ के रूप में चर्च परंपरा और चर्च प्राधिकरण पर केंद्रित है और प्रतिक्रिया में एक रूपक दृष्टिकोण है, लूथर और केल्विन ने पाठ पर ही अर्थ शास्त्र की व्याख्या करने वाले ग्रंथ के स्थान के रूप में ध्यान केंद्रित किया है। व्याख्या की रूपक पद्धति को त्यागना, भले ही उन्होंने ऐसा पूरी तरह से नहीं किया हो, इसके बजाय हर समय पाठ के ऐतिहासिक व्याकरणिक अर्थ पर ध्यान केंद्रित किया और दोनों ने टिप्पणियाँ लिखीं जो अभी भी व्याख्या और व्याख्या में एक मूल्यवान योगदान देती हैं।

संक्षेप में तब और उनके समय की व्याख्या की धाराओं के जवाब में इस प्रकार उनके समय और यहां तक कि हमारे दिन के व्याख्याशास्त्र में सुधार के योगदान को शायद मुझे लगता है कि इसे निम्नलिखित के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है। नंबर एक अर्थ और व्याख्या के प्राथमिक स्थान के रूप में धर्मग्रंथ की प्राथमिकता है कि अर्थ का प्राथमिक स्थान या अर्थ में प्राथमिक योगदान चर्च या केवल चर्च परंपरा का अधिकार नहीं है या हमारी धार्मिक और चर्च संबंधी परंपराएं होनी चाहिए। बाइबिल पाठ के अर्थ के अधीन। तो पाठ की प्राथमिकता उस सच्चे स्थान के रूप में जहां व्याख्या और व्याख्या होती है, सुधार आंदोलन के योगदानों में से एक है।

दूसरा पाठ के व्याकरणिक और ऐतिहासिक अर्थ पर जोर देना है। फिर, कई व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकें अभी भी व्याकरणिक ऐतिहासिक अर्थ या व्याकरणिक ऐतिहासिक व्याख्या कहलाने के लिए बहस करती हैं। वह फिर से सुधार पर वापस जाता है।

किसी पाठ का उसके व्याकरणिक संदर्भ, हिब्रू और ग्रीक व्याकरण के प्रकाश में अध्ययन करना और किसी पाठ का उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर अध्ययन करना। लेखक और पाठकों को समझना और लेखक जिस स्थिति को संबोधित कर रहा था। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया जाता है कि धर्मग्रंथ अपना सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार हो।

वह यह है कि धर्मग्रंथ की हमारी व्याख्या में एक निरंतरता होनी चाहिए, एक सुसंगतता होनी चाहिए ताकि हम ऐसी व्याख्या न करें जो धर्मग्रंथ द्वारा अन्यत्र कही गई बातों का खंडन करती हो। मैं फिर से सोचता हूँ कि यह सुधार का एक अवशेष है। और फिर अंततः धर्मग्रंथ की स्पष्टता।

तथ्य यह है कि कोई भी इसे पढ़ सकता है और समझ सकता है, कोई भी इसकी व्याख्या कर सकता है, यह फिर से सुधार की विरासत के कारण है। हालाँकि कभी-कभी हम ऐसी व्याख्याएँ सुनते हैं जिनके बारे में हम नहीं चाहते कि वे सच हों, लेकिन फिर भी सुधार ने इसे ले लिया है और इसे समझने और पढ़ने के लिए लोगों के हाथों में वापस दे दिया है। और मुझे लगता है कि ये सभी आज भी पवित्रशास्त्र की व्याख्या और दृष्टिकोण के हमारे तरीके को प्रभावित करते हैं।

इसकी स्पष्टता पर बल देते हुए इसकी बोधगम्यता पर बल देते हुए इस बात पर जोर दिया गया कि इसे इसके व्याकरणिक और ऐतिहासिक संदर्भ में समझा जाना चाहिए। यह समझकर कि इसकी व्याख्या अन्य धर्मग्रंथों के साथ लगातार की जानी चाहिए और धर्मग्रंथ के पाठ को बाइबिल का पाठ बनाकर। हमारी व्याख्या में इसे प्राथमिकता देते हुए इसे बाइबिल पाठ के अर्थ का केंद्र बनाया गया है।

तो इस बिंदु तक बाइबिल की व्याख्या के इतिहास का यह संक्षिप्त सर्वेक्षण मुख्य रूप से यह प्रदर्शित करने के लिए किया गया है कि जब आप बाइबिल का पाठ उठाते हैं और इसे पढ़ते हैं

और इसकी व्याख्या करते हैं तो आप फिर से खड़े हो जाते हैं, आप एक लंबी कहानी, एक लंबी परंपरा का हिस्सा होते हैं। बाइबिल पाठ का सामना करना। कोई भी इसे यूँ ही हवा में नहीं करता। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, कोई भी कोरी स्लेट के रूप में नहीं आता है।

ऐसा कोई भी पहली बार नहीं करता। चाहे आप इसे पहचानें या नहीं, आप उन अन्य लोगों से प्रभावित हैं जिन्होंने पाठ के साथ संघर्ष किया है और पाठ की व्याख्या की है और इसे प्रासंगिक बनाने की कोशिश की है, जो आपसे पहले पुराने नियम की ओर बढ़ चुके हैं। मैं अगले सत्र में जो करना चाहता हूँ वह यह है कि हम कुछ सौ साल आगे एक और लंबी छलांग लगाएंगे और एक तरह का स्विच गियर लेंगे और हम शाखा लगाना शुरू करेंगे और व्याख्या पर उन प्रभावों को देखना शुरू करेंगे जो बाइबिल से बाहर जाते हैं। दुभाषिए।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में हाल के अध्ययन और सोच की एक विशेषता और हम कैसे समझते हैं, ने प्रदर्शित किया है कि हेर्मेनेयुटिक्स अब केवल बाइबिल व्याख्याकारों का प्रांत नहीं है, बल्कि अन्य विषयों का भी क्षेत्र है। इसलिए हम आगे बढ़ेंगे और बाइबिल के पाठों को पढ़ने और व्याख्या करने के तरीके पर कुछ गैर-बाइबिल प्रभावों को देखेंगे और मुझे लगता है कि हम देखेंगे कि प्रभाव कई हैं और हम जांच करेंगे कि वे क्या हैं और मुख्य व्यक्ति क्या हैं इसके साथ जुड़ा हुआ है और फिर से यह बाइबिल के अंशों को पढ़ने और उनकी व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित कर सकता है। धन्यवाद।